क्या आप मुसलमान हो?

– गीता जोशी

बच्चों के मन में सामाजिक ग्रन्थियों ने चुपके से किस तरह जगह बना ली है यह जानने के लिये उनके मन की परतों को खोलकर देखना जरूरी है।

इन दिनों बच्चों की उपस्थिति स्कूल में बहुत ही कम है। इसका एक कारण तो यह है कि गांव में ही एक मंदिर है जिसमें कुछ दिनों तक कीर्तन का आयोजन गांव वालों ने मिल कर किया है। मुझे इसका एक और कारण समझ में आता है जो शायद यह हो सकता है कि परीक्षा के खत्म हो जाने के बाद बच्चों को भी कुछ विराम की आवश्यकता होती है, परन्तु ऐसा होता नहीं है परीक्षा खत्म होने के बाद भी उन्हें विद्यालय आना होता है।

खैर, मैं अपनी बात पर आती हूं। असेंबली खत्म होने के बाद बच्चों के साथ टी.एल.एम. बनाते हुए बातों–बातों में यह बात भी सामने आयी, बच्चों ने मुझसे पूछा कि मैम आप क्या हैं? मैंने बोला मुझे समझ नही आया कि तुम लोग क्या पूछना चाह रहे हो। तब एक बच्चे ने बोला मैम ये आपसे आपकी जाति पूछ रही है। इतने में ही स्कूल की एक अध्यापिका क्लास में आती है और मजाक में बोलती है कि तुम्हारी मैम तो मुसलमान हैं। बस तभी बच्चों का दूसरा प्रश्न किया कि मैम सच बोलिए, आप मुसलमान नहीं हो सकते।

जब बच्चों की इस तरह की प्रतिक्रिया आने लगी तो मैंने इस मजाक को आगे ले जाने की सोची, मैं यह जानना चाहती थी कि बच्चों के मन में मुसलमान शब्द को लेकर क्या भावना छुपी हुई है। मैंने बच्चो से बोला की हां में मुसलमान हूं तो क्या हुआ? तब एक बच्ची ने मुझसे बोला मैम आप लगते तो नहीं हो। मैंने बोला 'क्यों नहीं लगती क्या मुसलमान कुछ अलग तरीके के दिखाई देते हैं।' वह बोली नहीं मैम आप झूठ बोल रही हो आप मुसलमान हो ही नहीं सकती। तब एक दूसरे बच्चे ने कहा 'मुसलमान लोग तो गाय भी खाते हैं तो क्या आप भी गाय खाते हो?' मैंने बोला 'हां मैं खाती हूं।' मोहन फिर से बोला 'मैम छीः आप कैसे गाय को खा जाती हो कैसी लगती है खाने में?

मैंने बोला 'जैसे तुम लोग मछली खाते हो वैसे ही मैं गाय खाती हूं। मुझे तो बहुत पसंद है गाय खाना, बहुत स्वादिष्ट होती है।' फिर एक बच्ची बोली 'मैम आप कृपा कर के सच बोलो कि आप मुसलमान नहीं हो।' यह बोलते समय उसके हाव–भाव कुछ अलग दिखाई दे रहे थे। मैंने बोला 'मैं सच बोल रही हूं मैं मुसलमान ही हूं।' मैंने फिर से बच्चों से बोला कि अब जब तुम्हें यह पता चल गया है कि मैं मुसलमान हूं तो अब तुम मेरे से बात नहीं करोगे क्या? तब एक

बच्चा बोला 'मैम मुसलमान लोग अच्छे नहीं होते हैं अल्लाह–अल्लाह चिल्लाते रहते हैं।' अगर आप मुसलमान हो तो मैं आपसे बात नहीं करूंगा। मैंने बोला 'तुम भी तो हे भगवान करते रहते हो और इतने दिनों से मंदिर में कीर्तन का आयोजन किया हुआ है। तो हमारे अल्लाह बोलने से क्या परेशानी है? दोनों ही तो अपने–अपने भगवान की पूजा कर रहे हैं।' इस पर वह कुछ भी नहीं बोल रहे थे।

एक छोटे से बच्चे के मुंह से इस तरह की बातें सुनना मेरे लिए काफी आश्चर्य वाली बात थी। इतने छोटे से बच्चों के दिमाग में मुसलमान शब्द को लेकर कितना कुछ नकारात्मक था। एक बच्चे ने यह बोलकर इस बात को और आगे बढ़ाया कि गाय हमें दूध देती है फिर भी आप लोग उसे खाते हैं। इस पर मैंने उस बच्चे से पूछा कि क्या तुम बकरी खाते हो? वह बोला हां, मैंने उसे पूछा कि 'वह भी तो दूध देती है फिर उसे तुम क्यों खाते हो?' उसके पास इस बात का कोई जवाब नहीं था। इस पर स्कूल की शिक्षिका बोली जो बहुत देर से हमारी बातों को सुन रही थी 'अगर गाय को नहीं खाया जायेगा तो संसार में गायों की संख्या बहुत बढ़ जाएगी, हर जगह बस गायें ही होंगी तब क्या करोगे?' इस पर एक बच्चे ने बोला 'सबको जंगल छोड़ देंगे।' मैंने उसकी इस बात पर उससे पूछा जंगल में तो उसे शेर, चीता ये सब खा जायेंगे तब? वह बोला 'वो खाते है तो खाएं।' तब मैंने बोला 'तुम्हें किस चीज से परेशानी है गाय को खाए जाने से या फिर गाय को मुसलमान खा रहा है इससे?' इस बात पर बच्चो ने बोला 'मुझे नहीं पता।' बस आप सच बोल दो कि आप मुसलमान हो या नहीं?

इस बात पर मैंने स्कूल की शिक्षिका से भी बात की जो हमारी बातों को सुन रही थी। उनका कहना था कि बच्चे अपने घर में अपने माता–पिता से यही सब सुनते हैं और वही बोलते हैं। मैंने शिक्षिका से कहा कि इन सब बातों पर भी बच्चों से बाते करती रहनी चाहिए। उस पूरे दिन मैं यही सोचती रही कि कैसे इतने छोटे से बच्चे के मन और दिमाग में इस तरह के विचारों से घिरा हुआ है।

(लेखिका अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन, उधमसिंहनगर से जुड़ी हैं)

नोट– आलेख में बच्चों के नाम काल्पनिक हैं।

कमजोर

– अंतोन चेखव

आज मैं अपने बच्चों की अध्यापिका यूलिमा वार्सीयेव्जा का हिसाब चुकता करना चाहता था।

''बैठ जाओ, यूलिमा वार्सीयेव्जा।'' मैंने उससे कहा, ''तुम्हारा हिसाब चुकता कर दिया जाए। हाँ, तो फैसला हुआ था कि तुम्हें महीने के तीस रूबल मिलेंगे, हैं न?''

''नहीं,चालीस।''

''नहीं तीस। तुम हमारे यहाँ दो महीने रही हो।''

''दो महीने पाँच दिन।''

''पूरे दो महीने। इन दो महीनों के नौ इतवार निकाल दो। इतवार के दिन तुम कोल्या को सिर्फ सैर के लिए ही लेकर जाती थीं और फिर तीन छुट्टियाँ... नौ और तीन बारह, तो बारह रूबल कम हुए। कोल्या चार दिन बीमार रहा, उन दिनों तुमने उसे नहीं पढ़ाया। सिर्फ वान्या को ही पढ़ाया और फिर तीन दिन तुम्हारे दाँत में दर्द रहा। उस समय मेरी पत्नी ने तुम्हें छुट्टी दे दी थी। बारह और सात, हुए उन्नीस। इन्हें निकाला जाए, तो बाकी रहे... हाँ इकतालीस रूबल, ठीक है?''

यूलिया की आँखों में आँसू भर आए।

'कप–प्लेट तोड़ डाले। दो रूबल इनके घटाओ। तुम्हारी लापरवाही से कोल्या ने पेड़ पर चढ़कर अपना कोट फाड़ डाला था। दस रूबल उसके और फिर तुम्हारी लापरवाही के कारण ही नौकरानी वान्या के बूट लेकर भाग गई। पाँच रूबल उसके कम हुए... दस जनवरी को दस रूबल तुमने उधार लिए थे। इकतालीस में से सताईस निकालो। बाकी रह गए चौदह।''

यूलिया की आँखों में आँसू उमड़ आए, ''मैंने सिर्फ एक बार आपकी पत्नी से तीन रूबल लिए थे....।''

''अच्छा, यह तो मैंने लिखा ही नहीं, तो चौदह में से तीन निकालो। अब बचे ग्यारह। सो, यह रही तुम्हारी तनख्वाह। तीन, तीन... एक और एक।''

''धन्यवाद!'' उसने बहुत ही हौले से कहा।

''तुमने धन्यवाद क्यों कहा?''

''पैसों के लिए।''

''लानत है! क्या तुम देखती नहीं कि मैंने तुम्हें धोखा दिया है? मैंने तुम्हारे पैसे मार लिए हैं और तुम इस पर धन्यवाद कहती हो। अरे, मैं तो तुम्हें परख रहा था... मैं तुम्हें अस्सी रूबल ही दूँगा। यह रही पूरी रकम।''

वह धन्यवाद कहकर चली गई। मैं उसे देखता हुआ सोचने लगा कि दुनिया में ताकतवर बनना कितना आसान है।